G20 भारत 2023 INDIA

Azadi Ka Amrit Mahotsav

भारत सरकार

विभागीय गृह पत्रिका

शेवा कृति

वर्ष : 2023-24 अंक 5

सीमाशुल्क मुंबई अंचल -II

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा-शेवा,

तालुका - उरण, जिला - रायगड, महाराष्ट्र - 400 707

77वें स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

विभागीय गृह पत्रिका

शेवा कृति

वर्ष : 2023-24 अंक : 5

संरक्षक

राजेश पाण्डे

मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क मुंबई, अंचल - II

प्रधान संपादक

डी. एस. गर्ब्याल

आयुक्त

संपादक मण्डल

दीपक कुमार गुप्ता	सोनल बजाज	संजीव कुमार सिंह	कलाकान्त सिंह
आयुक्त	आयुक्त	आयुक्त	आयुक्त

कृष्ण कुमार प्रसाद

अपर आयुक्त

पत्रिका में प्रकाशित विचारों से संपादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मुख्य पृष्ठ की कैनवास पेंटिंग इस कार्यालय में कार्यरत श्रीमती सीमा जगताप प्रशासनिक अधिकारी की सुपुत्री कुमारी मुग्धा जगताप, कक्षा 12 के द्वारा बनाई गई है।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

G20 भारत 2023 INDIA

मुख्य सीमाशुल्क आयुक्त, मुंबई अंचल - II

Chief Commissioner of Customs

Mumbai Customs Zone-II

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन /

JAWAHARLAL NEHRU CUSTOM HOUSE

पोस्ट : शेवा, तालुका : उरण, जिला : रायगढ़, महाराष्ट्र-400707

Post : Sheva, Taluka : Uran, District : Raigad, Maharashtra - 400707

संरक्षक की कलम से....

राजेश पाण्डे

(मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क)

सीमाशुल्क अंचल कि अपार व्यस्तताओं के बीच हमारे अधिकारीगण राजभाषा के महत्व को समझते हुए, राजभाषा में सृजन जारी रखते हैं, यह हर्ष का विषय है। राजस्व संग्रहण और तस्करी के दुस्साहसों को विफल करने के सतत् प्रयत्नों में लीन सीमाशुल्क अधिकारी, राजभाषा में अपना कार्य अधिकाधिक करें, यही प्रेरणा लेकर 'शेवा कृति' का यह ताजा अंक आया है। सभी रचनाकारों एवं सहायकों के माध्यम से यह कार्य संतोषजनक रूप से सम्पन्न हुआ।

सही मायने में सीमाशुल्क परिवार के लिए मन की सृजनात्मकता और उसके प्रस्तुतीकरण के लिए यह राजभाषा पत्रिका एक माध्यम का कार्य करती हैं और एक सशक्त मंच प्रदान करती है। पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य इससे भी बढ़कर है। कार्यालयीन प्रयोग के अलावा भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। पत्रिका के माध्यम से हम हिन्दी के व्यावहारिक स्वरूप को अधिकारियों के मध्य प्रचलित करने का प्रयास कर रहे हैं। मामला राष्ट्रीय एकता का भी है। भारत जैसे बहुभाषाई देश में जहां सभी राज्यों की अपनी अपनी शासकीय भाषा है, राजभाषा हिन्दी एक सेतु का कार्य करती है। हिन्दी विश्वपटल पर भारत की आवाज बनकर उभर रही है और विभिन्न वैश्विक मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व करके देश का गौरव बढ़ा रही है।

'शेवा कृति' का पांचवां अंक आपको सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह एक सुखद अनुभव है कि हम लगातार पांचवें वर्ष इस पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं।

(राजेश पाण्डे)

सीमाशुल्क आयुक्त, मुंबई अंचल - II

Commissioner of Customs

Mumbai Customs Zone-II

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन /

JAWAHARLAL NEHRU CUSTOM HOUSE

पोस्ट : शेवा, तालुका : उरण, जिला : रायगढ़, महाराष्ट्र-400707

Post : Sheva, Taluka : Uran, District : Raigad, Maharashtra - 400707

प्रधान संपादक की डेस्क से.....

डी.एस. गर्ब्याल
(आयुक्त, सीमाशुल्क)

संपादक के रूप में विभागीय ई-पत्रिका 'शेवा कृति' का पांचवां अंक आपको सौंपते हुए मुझे अपार खुशी एवं आत्मसंतुष्टि हो रही है।

एक कार्यस्थल के रूप में सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II की विशालता, कार्य बिस्तार आदि से आप सभी भली भांति परिचित होंगे। जहां सभी अधिकारी नई-नई चुनौतियों, कार्य के दबाव का सामना करते हुए राजस्व संग्रहण के लक्ष्य को पाने में लगे रहते हैं, वहीं दूसरी ओर पत्रिका का प्रकाशन जैसी राजभाषाई गतिविधियां हमें अपनी सृजनात्मकता को सामने लाने में प्रयासरत दिखाई देती हैं।

जैसा कि हम जानते हैं कि शासकीय सेवक के रूप में हम सभी राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियमों से बंधे हुए हैं और राजस्व, प्रशासन, कार्यकारी दायित्वों के साथ-साथ हमें यह नहीं भूलना है कि सरकार की राजभाषा नीति का पालन करना न केवल हम सभी का दायित्व हैं वरन यह एक अनिवार्य संवैधानिक अपेक्षा भी है। हमें अपने रोजमर्या की कार्यालयीन गतिविधियों में यदि राजभाषा का समावेश करना है तो उसकी शुरुआत हिन्दी के सरल शब्दावलियों के प्रयोग, हिन्दी के छोटे-छोटे वाक्यों से और सामान्य पारिभाषिक शब्दों से करना चाहिए। अनुभवी अधिकारियों के साथ साथ नई पीढ़ी के अधिकारी जिन्होंने केन्द्र सरकार के कार्यालय में अभी-अभी सेवाएं प्रारंभ की हैं, उनके मनमस्तिष्क में यह पत्रिका अवश्य रूप से एक छाप छोड़ेगी क्योंकि उनको सभी विभागीय गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होगी और राजभाषा की महत्ता को भी समझेंगे।

प्रकाशन से जुड़े एवं लेखन सामग्री उपलब्ध कराने के वाले सभी अधिकारियों को मैं धन्यवाद प्रेषित करता हूँ और आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

(डी. एस. गर्ब्याल)

सीमाशुल्क आयुक्त, मुंबई अंचल - II

Commissioner of Customs

Mumbai Customs Zone-II

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन /

JAWAHARLAL NEHRU CUSTOM HOUSE

पोस्ट : शेवा, तालुका : उरण, जिला : रायगढ़, महाराष्ट्र-400707

Post : Sheva, Taluka : Uran, District : Raigad, Maharashtra - 400707

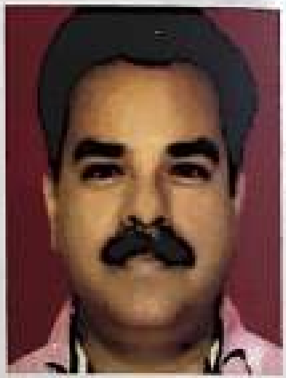

दीपक कुमार गुप्ता
(आयुक्त, सीमाशुल्क)

हर्ष का विषय है कि 'शेवा कृति' का पांचवां अंक प्रकाशित हो रहा है। विशाल कार्यबल वाले इस सीमाशुल्क भवन का हिस्सा बनते हुए मुझे यह आशा है कि शेवा कृति के पिछले अंक की भांति इस अंक को भी आपका स्नेह मिलेगा।

स्पष्ट है कि ऐसी गतिविधियों से राजभाषा हिन्दी में काम-काज निपटाने के लिए बल मिलेगा क्योंकि सरकारी काम-काज हम अपनी रोजमर्रा की भाषा में करेंगे। हम सरल हिन्दी का प्रयोग करें, जिससे सम्प्रेषण बना रहे। हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि एक कार्यालय में राजभाषा हिन्दी का प्रचार प्रसार किसी पद विशेष पर नहीं वरन हम सब की इच्छाशक्ति पर निर्भर करता है। राजभाषा कार्यान्वयन पर सरकार के द्वारा समय समय पर जारी होने वाले दिशा निर्देशों का पालन ही राजभाषा के प्रति हमारा सच्चा सम्मान होगा।

प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों को उनके योगदान के लिए धन्यवाद।

(दीपक कुमार गुप्ता)

सीमाशुल्क आयुक्त, मुंबई अंचल - II
Commissioner of Customs
Mumbai Customs Zone-II
जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन /
JAWAHARLAL NEHRU CUSTOM HOUSE
पोस्ट : शेवा, तालुका : उरण, जिला : रायगड़, महाराष्ट्र-400707
Post : Sheva, Taluka : Uran, District : Raigad, Maharashtra - 400707

सोनल बजाज
(आयुक्त, सीमाशुल्क)

शासकीय कार्यों में राजभाषा हिन्दी को उचित स्थान देना हमारा संवैधानिक दायित्व है और आज 'शेवा कृति' के पांचवें अंक का अवतरण इस दायित्व के निभाने की दिशा में हमारा सच्चा प्रयास है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से प्रकाशित की जानेवाली पत्रिकाओं के द्वारा सरकार की राजभाषा नीति को लागू करने में सहायता मिलती है क्योंकि इससे हिन्दी में काम करने का वातावरण तैयार होता है।

आप सभी को शेवा कृति का पांचवां अंक सौंपते हुए मुझे अगाध प्रसन्नता हो रही है। प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों की सहभागिता प्रशंसनीय है।

(सोनल बजाज)

सीमाशुल्क आयुक्त, मुंबई अंचल - II

Commissioner of Customs

Mumbai Customs Zone-II

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन /

JAWAHARLAL NEHRU CUSTOM HOUSE

पोस्ट : शेवा, तालुका : उरण, जिला : रायगढ़, महाराष्ट्र-400707

Post : Sheva, Taluka : Uran, District : Raigad, Maharashtra - 400707

संजीव कुमार सिंह

(आयुक्त, सीमाशुल्क)

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारी राजभाषा पत्रिका 'शेवा कृति' का पांचवां अंक हमारे समक्ष प्रस्तुत है।

'शेवा कृति' सीमाशुल्क परिवार को एक विभागीय मंच प्रदान करती है जिसमें हम राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार का मुख्य ध्येय मन में रखते हुए अपनी कृतियों को, अपने अनुभवों को उत्साहपूर्वक प्रदर्शित करते हैं।

राजभाषा हिन्दी विभिन्न भाषा भाषियों तथा संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है, इसीलिए हिन्दी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा की धनी है। अगर यह हमारे मन मस्तिष्क में रची बसी है तो हमें इसे विभागीय कार्यों की भाषा बनाने में कोई समस्या नहीं होनी चाहिए।

मैं, पत्रिका से जुड़े सभी साथियों को शुभकामना देता हूँ और इसके आगामी अंक सुरुचिपूर्ण हों, ऐसी कामना करता हूँ।

(संजीव कुमार सिंह)

सीमाशुल्क आयुक्त, मुंबई अंचल - II

Commissioner of Customs

Mumbai Customs Zone-II

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन /

JAWAHARLAL NEHRU CUSTOM HOUSE

पोस्ट : शेवा, तालुका : उरण, जिला : रायगड़, महाराष्ट्र-400707

Post : Sheva, Taluka : Uran, District : Raigad, Maharashtra - 400707

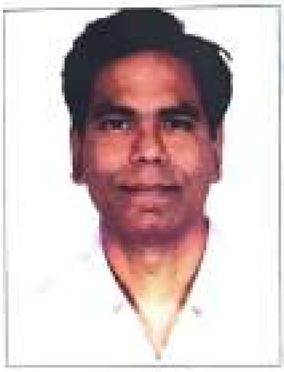

कलाकान्त सिंह
(आयुक्त, सीमाशुल्क)

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन भारत के शीर्षस्थ सीमाशुल्क संस्थानों में से एक है। राजस्व संग्रह की विविध गतिविधियों, नए नए प्रयोगों, योजनाओं एवं विविध व्यापारिक गतिविधियों के मध्य राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन एक हर्ष का विषय है। 'शेवा कृति' के पांचवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। स्पष्ट है कि सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का ध्यान रखा जा रहा है। साथ ही साथ पत्रिका के माध्यम से राजस्व उगाही के अतिरिक्त यहाँ होने वाली अन्य गतिविधियों की भी झलकियां मिलती हैं।

प्रकाशन कार्य, सम्पादन, आवश्यक सूचनाएं प्रदान करने के लिए सभी उच्च अधिकारीगण एवं सहयोगी प्रशंसा के पात्र हैं जिनके प्रयासों से पत्रिका को एक साकार रूप मिला।

(कलाकान्त सिंह)

अनुक्रम

क्रम	रचना	रचनाकार/संकलनकर्ता	पृष्ठ संख्या
❖	माननीय राजस्व सचिव संजय मल्होत्रा जी	सचित्र विवरण	10
❖	सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग	कृष्ण कुमार प्रसाद	16
❖	ग़ज़ल	मुकेश कुमार मिश्रा	18
❖	राजस्व आँकड़े संकलित	मुख्य आयुक्त कार्यालय	19
❖	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस		20
❖	काव्यधारा	ब्रजभूषण	22
❖	योग दिवस का आयोजन		23
❖	एक विकसित राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत	शरत चन्द्र झा	24
❖	राजभाषा कार्यान्वयन - जांच बिन्दु एवं अनुदेश 2023-2024		26
❖	हिन्दी पखवाड़ा एवं राजभाषा सम्मेलन		30
❖	न्हावा शेवा निर्यात प्रोत्साहन विजन		32
❖	मंगलोर से गोवा की यात्रा (यात्रा विषय)	कलाकान्त सिंह	34
❖	सतर्कता जागरूकता सप्ताह		35
❖	बच्चों पर हावी होती टेक्नॉलोजी	रवीन्द्र कुमार द्विवेदी	37
❖	बच्चों की विथिका		39
❖	उपलब्धि		41

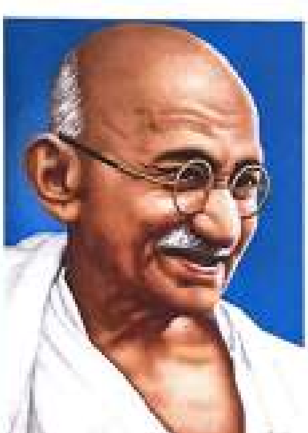

किसी एक गलती को बहुत सहारा मिल जाए तो वो सच नहीं बन सकती और ना ही सच गलत हो सकता है, भले वो दिखाई नहीं देता। सच हमेशा खड़ा होता है, भले ही उसे किसी भीड़ का सहारा ना मिले। सत्य आत्मनिर्भर होता है।

- महात्मा गांधी

मानवीय राजस्व सचिव संजय मल्होत्रा जी

एवं

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा के अधिकारीगण

राजस्व सचिव
माननीय संजय मल्होत्रा जी
का न्हावा शेवा दौरा
(दिनांक 22.06.2023)

राजस्व सचिव माननीय संजय मल्होत्रा जी का स्वागत करते सीमाशुल्क आयुक्त महोदय

डी पी वर्ल्ड टर्मिनल का दौरा करते हुए
माननीय राजस्व सचिव
एवं अन्य वरिष्ठ सीमाशुल्क अधिकारियों

अधिकारियों द्वारा पोत संचालन
गतिविधियां देखते हुए

माननीय राजस्व सचिव संजय मल्होत्रा जी का सीमाशुल्क भवन में आगमन

मुख्य आयुक्त महोदय द्वारा राजस्व सचिव का पुष्पों से स्वागत

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन के कार्यों पर प्रस्तुति एवं सीमाशुल्क अधिकारियों के साथ चर्चा

आगंतुक को स्मृति चिह्न प्रदान करते मुख्य आयुक्त महोदय

मानीय राजस्व सचिव का कंटेनर स्कैनिंग डिवीजन (सीएसडी) दौरा

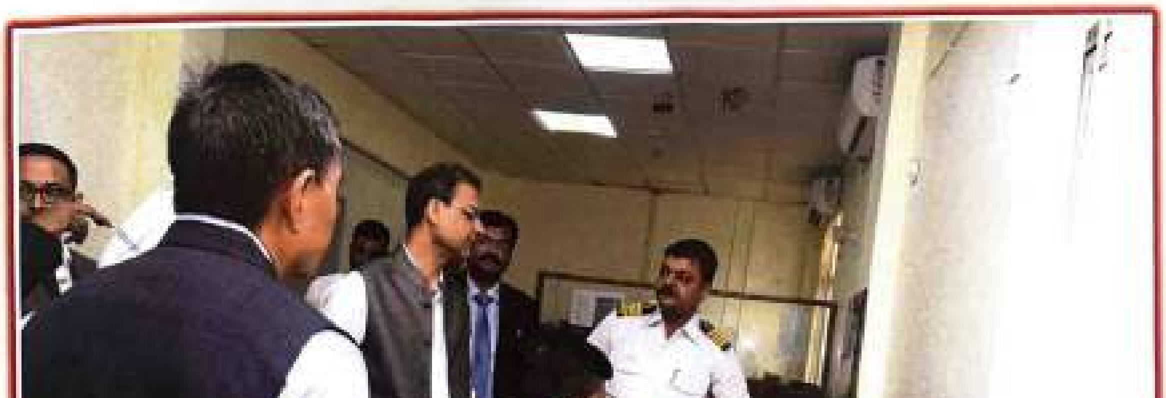

कंटेनर स्कैनिंग डिवीजन की कार्यप्रणाली की जानकारी लेते माननीय राजस्व सचिव

आलेख

सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग
'कैसी हिचक, कैसी शंका!'

कृष्ण कुमार प्रसाद
अपर आयुक्त

राजभाषा अर्थात् ऐसी भाषा जिसमें शासन, प्रशासन के कार्य संपादित किए जाएँ। सर्वविदित है कि भारत संघ की राजभाषा हिन्दी है और उसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। इस दर्जे को प्राप्त हुए हिन्दी को 60 वर्षों से ज्यादा का समय बीत गया है। हिन्दी भाषा ने खूब नाम कमाया और आज के समय में सम्पूर्ण विश्व में 490 मिलियन लोग हिन्दी जानते हैं जो कि मेंडेरिन चाइनीस के बाद दूसरे नंबर पर सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा है। भारत संघ में स्वतंत्रता के बाद बहुत से सरकारी तंत्र आए, स्थापित हुए, व्यवस्थाएं, सरकारें आई और गई और सब ने राजभाषा के लिए अपनी नीतियाँ तैयार की, उनको कार्यान्वित किया और हिन्दी के उत्थान, गौरव को बनाए रखने के लिए नाना प्रकार के प्रयास किए, लोकतंत्र होने के नाते हिन्दी को जबरदस्ती थोपा भी नहीं गया, जिसका उदाहरण हमें राजभाषा नियम 1976 में दिखाई देता है। जहां पर नियम संख्या चार, नियम संख्या छह, नियम संख्या सात और नियम संख्या आठ में जब जब हिन्दी भाषा में काम करने की बात आती है, तब-तब अंग्रेजी भाषा का भी विकल्प दे दिया जाता है अर्थात् हिन्दी अथवा अंग्रेजी। सैकड़ों हिन्दी पदों की स्थापना करके सरकार ने हिन्दी के प्रति अपनी निष्ठा दर्शाई, ऑडियो विजुअल प्रसार के माध्यम से हिन्दी का खूब प्रचार किया और राजभाषा के नाम पर हर प्रकार की वित्तीय निधि प्रदान की। हिन्दी की संसदीय उप समितियों के दौरे अपने आप में सर्वोच्च साक्ष्य है कि सरकारी पक्ष की ओर से प्रयास किए गए हैं और किए जा रहे हैं।

यदि हम शीर्षक की ओर ध्यान दें, तो उपर्युक्त बातें भूमिका स्वरूप मानी जा सकती हैं, जो वस्तुस्थिति दर्शाती हैं कि राजभाषा हिन्दी को पूरी तरह से कर्मचारियों को अपनाना चाहिए। किन्तु ऐसा बिलकुल भी नहीं हो रहा है। सब हिन्दी में बोलते हैं, हमारी अपनी भाषा है, हम सबका उस पर नियंत्रण है। फिर भी सरकारी कामकाज में इसका प्रयोग बहुत कम हो रहा है। आज हमें इसके मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हमें इसके कामकाज में प्रयोग करने से कैसी हिचक होती है और क्या शंका होती है? यह मान्य है कि भारतीय सरकारी तंत्र पूरी तरह से ब्रिटिश प्रणाली पर आधारित है, पर अब तक हमने इस तंत्र का बहुत कुछ भारतीयकरण कर लिया है और यदि हम इस तर्क की बात करें कि हम ग्लोबलाइजेशन के जमाने में हैं और यदि अंग्रेजी नहीं प्रयोग करेंगे तो पिछड़ जाएँगे तो इसके विपरीत जापान, कोरिया, जर्मनी, रूस जैसे देश का उदाहरण भी हैं, जो कि पूरी तरह से विकसित हैं और किसी भी तरह से वह अपनी मूल या राजकीय भाषा में ही काम करते है चाहें वह सामान्य कामकाज हो या अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान या वैज्ञानिक खोजे हो या शिक्षा का मामला हो। तो तर्क का विषय उसी स्थान पर पहुँच जाता है कि हमें इस तथ्य के मनोवैज्ञानिक पक्षों को जाँचना होगा कि हम राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को लेकर इतनी शंका में क्यों हैं?

सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करनेवाले या उसका प्रयास करनेवालों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने की आवश्यकता है। प्रमुख रूप से उनके विचारों में हिन्दी को लेकर पूर्वाग्रहों का होना, भाषा की दुरूहता एवं अपने आप को लक्ष्य भाषा पूरी तरह से व्यक्त न कर पाना, कामकाजी परिवेश में अपने आप को अलग न दिखाने की प्रवृत्ति आदि नाना प्रकार के तथ्य हैं, जो सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में अड़चनें पैदा करते हैं।

सर्वप्रथम बात करते हैं सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को लेकर आम कर्मचारियों के मन में बसे कई तरह के पूर्वाग्रहों और गलतफहमियों की। उदाहरण के तौर पर मैंने पाया है कि आम कर्मचारी यह सोचता है कि हिन्दी में लिखी गई टिप्पणीयों (नोटिंग्स) पर बड़े अधिकारियों का ध्यान नहीं जाएगा या उस पर ज्यादा जोर नहीं पड़ेगा, हमारी बात को दोयम दर्जे का माना जाएगा या उच्च अधिकारी को कहीं

यह भास न हो जाये कि अमुक कर्मचारी को अंग्रेजी ठीक से नहीं आती इत्यादि इत्यादि.......। फाइल में नोटिंग लिखते वक्त किसी अंग्रेजी के शब्द की स्पेलिंग न आने पर कर्मचारी अनेक शब्दकोशों, संग्रहों आदि खोजने लगता है परंतु यदि हिन्दी की बात हो तो वह सीधे तौर पर वहाँ पर एक मानक समानार्थी अंग्रेजी शब्द लिख देगा, वह हिन्दी की शुद्ध वर्तनी के लिए शब्द कोश का सहारा नहीं लेगा या किसी सहयोगी से नहीं पूछेगा। इस तरह के पूर्वधारणाओं को हटाने का वक्त आ गया है। हमें पूरी तरह से विश्वास होना चाहिए कि हिन्दी एक बहुत ही प्रभावी, वैज्ञानिक एवं सरल भाषा है। सभी अधिकारी हिन्दी में किए गए कार्यों को बढ़ावा दिये जाने के लिए कटिबद्ध हैं तो कर्मचारियों को हिचक कैसी! ऐसा कई बार देखा गया है कि यदि आप ने किसी विषय पर नोटिंग की तरफ यदि हिन्दी में टिप्पणी कर दी है तो उच्च अधिकारी हमेशा आगे की टिप्पणी हिन्दी में ही लिखता है और यह क्रम आगे चल निकलता है। कर्मचारियों को हिन्दी टिप्पणी करते समय गर्व का अनुभव होना चाहिए, भले सादी और सुलभ भाषा ही सही, परंतु प्रयास करना चाहिए। उच्च अधिकारीगण को चाहिए कि हिन्दी में किए गए कार्यों पर अमुक कर्मचारी के लिए उसके हिन्दी के फाइल कार्यों पर कहीं कोने में एक छोटा प्रशंसात्मक टिप्पणी लिखें जिससे उनके मनोबल में वृद्धि हो सके और इससे दूसरों को भी प्रेरणा मिले।

एक अन्य पहलू है भाषा की दुरुहता एवं अपने आप को हिन्दी में पूरी तरह से व्यक्त न कर पाना, जिसके कारण सरकारी कामकाज हिन्दी में करने पर हिचक होती है। आम तौर पर यह माना जाता है कि सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग एक पेचीदा काम है और अंग्रेजी में इसे कम शब्दों में ही किया जा सकता है। वस्तुत: इसके पीछे सच्चाई यह है कि ज्यादातर सरकारी फाइल काम पिछले कर्मचारी द्वारा किए जा रहे कार्यों को देखकर किया जाता है और अंग्रेजी की कहावत को याद रखा जाता है। 'टर्न द फाइल, टर्न टु वर्क', ऐसा कई वर्षों से चला आता है। इस मानसिकता ने हर नए आने वाले कर्मचारियों को अपने स्वयं की भाषा, सोच को हिन्दी में प्रस्तुत करने से रोका और सरकारी हिन्दी शब्द प्रचलित न हो सके तो भाषा दुरूह लगने लगी। हालांकि हिन्दी शब्दकोश में कठिन सरकारी शब्दो के अलावा आसान शब्द भी हैं। अनुमोदन शब्द कठिन लगता है तो स्वीकृति लिखा जा सकता है। सरकार स्वयं भी इस बात का प्रचार कर रही है कि सरकारी काम काम में सरल हिन्दी का प्रयोग किया जाये। तो सौ बात की एक बात कि फाइल का काम करनेवाले कर्मचारीगण अपने स्वयं के विचारों को सरल एवं सटीक हिन्दी भाषा में लिखें। उद्देश होना चाहिए अपने विचारों को सरल हिन्दी में व्यक्त करना एवं कामकाज में स्पष्टता और वही सरल भाषा जब आगे आनेवाले कर्मचारी प्रयोग करेगा तो हिन्दी में कामकाज को बढ़ावा मिलेगा।

ऊपर बताए गए कारणों में एक बहुत ही अनछुआ पहलू भी आता है, जिससे सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करने में हिचक होती है, वह है 'कामकाजी परिवेश में अपने आप को अलग न दिखाने की प्रवृत्ति'। बहुत से सरकारी कर्मी इस सोच के होते हैं कि यदि वे हिन्दी में कामकाज करेंगे तो वे अन्य कर्मियों से बेहतर और अलग हटकर नजर आएंगे। इससे अन्य अधिकारियों का ध्यान उन पर जाएगा और फिर उनके वरिष्ठ अधिकारी बार-बार उनको ही काम देंगे। यह विचारधारा भारतीय परिप्रेक्ष में सभी सरकारी कार्यालयों में देखी जा सकती है। ऐसी सोच रखनेवालों को सोचना चाहिए कि उनके पास अतिरिक्त योग्यता है और उनकी यह सोच से बढ़कर है राजभाषा का सम्मान। यदि आप अपनी भाषा को ऊपर नहीं ले जाएगें तो कौन ले जाएगा? यह भी ज्ञात होना चाहिए कि हमारी वार्षिक निष्पादन रिपोर्ट/ सी.आर. में उनके द्वारा हिन्दी में किए गए कार्यों का विवरण, राजभाषा में कार्य सम्पादन में उनके योगदान का विवरण भी सम्मालित है। अत: बिना किसी गलत सोच के हिन्दी का उपयोग अपने काम में लाएँ। आप सभी से अलग अपनी पहचान हिन्दी के माध्यम से बना सकते हैं और वरिष्ठ अधिकारियों का विश्वास जीत सकते हैं, बस आपको इस बिन्दु पर सकारात्मक सोच रखनी है।

इस प्रकार पुन: इस लेख के शीर्षक पर ध्यान देते हैं 'सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग'- 'कैसी हिचक कैसी शंका!' और इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यह हिचक बहुत हद तक व्यक्तिगत मनोविज्ञान की है, हमें हिन्दी का भरपूर ज्ञान है और हम सरकारी कामकाज वाली हिन्दी को एक अलग भाषा नहीं समझते हैं। यह स्पष्ट है कि जिस भाषा को आप चाहकर भी प्रयोग में नहीं लाएँगे तो वह भाषा धीरे-धीरे अपरचित हो जाएगी और जिन शब्दों वाक्यों को आप के द्वारा प्रयोग किया जाएगा वह शब्द, वाक्य, भाषा आपके उतने अच्छे मित्र बन जाएंगे और आप बिना किसी हिचक और शंका के उनका प्रयोग शासकीय कार्यों में कर सकेंगे और लोग भी धीरे-धीरे आपके काम को पहचान कर अपना उत्तर हिन्दी में कर सकेंगे।

❖❖❖

ग़ज़ल

मुकेश कुमार मिश्रा
सीमाशुल्क, अधीक्षक

खा रहा गाँव की ज़मीं कब से
शहर की भूख क्यूँ नही मिटती

आइना लाख साफ़ करता हूँ
शक़्ल फिर भी मिरी नही दिखती

आग जंगल की बुझ भी जाती है
पेट की आग पर नही बुझती

मैं तो सुनता हूँ बात दुनिया की
पर ये दुनिया मेरी नही सुनती

बह रही हो हवा जिधर ताज़ी
कोई खिड़की उधर नही खुलती

शोर उठता है रोज ही दिल मे
पर ये दीवार क्यूँ नही गिरती

सब ख़बर झूठ है, जानता है बशर
बिक रही है क़लम, मानता है बशर

बन गया हूँ ख़ुदा, ज़द में है सब मेरे
कैसे-कैसे वहम पालता है बशर

फ़क्र है जानवर की वफ़ाई पे अब
बेवफ़ाई की हद लाँघता है बशर

भूख इसकी बढ़ी है इधर इस क़दर
आदमी का ही हक़ मारता है बशर

बूँद इक है बहुत तिश्नगी के लिए
डूबना फिर भी क्यूँ चाहता है बशर

*बशर - आदमी

सीमाशुल्क मुंबई,अंचल-II
जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा

महत्वपूर्ण राजस्व आंकड़े 2022-23

क्रम संख्या	विवरण DETAILS	कुल (रुपये करोड़ में)
1.	सकल राजस्व Gross Revenue	146926.07
2.	शुल्कवापसी का बहिर्गमन Outgo of Drawback	302.99
3.	धनवापसी का बहिर्गमन Outgo of Refund	6977.58
4.	शुद्ध राजस्व Net Revenue	139645.5
5.	मूल सीमाशुल्क & अन्य BCD & Others (Net)	39972.95
6.	आईजीएसटी & मुआवजा उपकर IGST & Comp. Cess	99672.55
7.	आईजीएसटी धनवापसी संवितरण IGSTRefund Disbursement	29274.142
8.	टीईयू की कुल संख्या Total number of TEU's	6050854
9.	टीईयू की कुल संख्या (आयात) Total number of TEU's (Import)	3109755
10.	टीईयू की कुल संख्या (निर्यात) Total number of TEU's (Export)	2941099
11.	स्कैन किए गए कुल कंटेनर (टीईयू में)No. of containers scanned (in TEUs)	304803
12.	फाइल की गई बिल ऑफ इंट्रीस की संख्या No. of Bills of Entry filed (Home Consumption + Warehouse + X Bond)	941355
13.	नौवहन बिलों की संख्या (दिये गए एलईओ) No. of shipping Bills (given LEO)	1478050
14.	आयातित वस्तुओ का आकलन योग्य मूल्य (घरेलू उपभोग + वेयरहाउस + X बॉन्ड) Assessable value of imported goods (Home Consumption + Warehouse +X Bond)	665323.20
15.	शुल्कदेय माल का मूल्य (बिल्स ऑफ एंट्रीस का घरेलू उपभोग + X बॉन्ड) Value of dutiable goods (BEs Home consumption + X Bond)	542528.07
16.	शुल्कमुक्त माल का मूल्य (बिल्स ऑफ एंट्रीस का घरेलू उपभोग + X बॉन्ड) Value of duty free goods (BEs Home consumption + X Bond)	56454.65
17.	अधिसूचना के अनुसार छोड़ा गया राजस्व Revenue forgone vide Notifications	118331.22
18.	निर्यात संवर्धन योजनाओं के द्वारा छोड़ा गया राजस्व Revenue forgone by EP Schemes	22870.31
19.	डीपीडी कंटेनरों की संख्या (टीईयू) No. of DPD containers (TEUs)	1254369

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में 08 मार्च 2023 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का आयोजन

जैसा कि सर्वविदित है कि सम्पूर्ण विश्व में 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है और यह दिन विभिन्न कार्यस्थलों में अपनी महिला कर्मचारियों की उपलब्धियों और अमूल्य योगदान को याद करने का दिन होता है। यह लैंगिक समानता की दिशा में बढ़ाया गया पहला कदम है। जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में 8 मार्च, 2023 को महिला दिवस उत्साह के साथ मनाया गया।

कार्यालय परिसर को फूलों, गुब्बारों से सजाया गया था और हर जगह बैनर लगाए गए थे, जो उत्सव के माहौल को बढ़ा रहे थे। महिला अधिकारियों ने इस अवसर पर शानदार पोशाकें पहनकर अपनी खुशी व्यक्त की।

कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती ममता सैनी, अपर आयुक्त मैडम के प्रभावशाली और सकारात्मक संभाषण से हुई। इसके उपरांत सीमाशुल्क भवन में तैनात महिला हाउसकीपिंग और सुरक्षा कर्मचारियों को समर्पित एक विशेष सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिनके द्वारा इस भवन के सुचारु व्यवस्था और कामकाज में महत्वपूर्ण योगदान दिया जाता है।

महिला दिवस समारोह के दौरान उनके कार्यों की सराहना स्वरूप जूट के बैग भेंट स्वरूप दिए गए।

इस कार्यक्रम ने महिला कर्मचारियों को गायन और नृत्य प्रदर्शन सहित अपनी छिपी प्रतिभा दिखाने के लिए एक मंच भी प्रदान किया। उनकी पेशेवर भूमिकाओं और पदों के बावजूद, सभी महिला कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया और इन पलों को एक यादगार बनाया।

हालांकि, यह स्वीकार करना आवश्यक है कि इस तरह के

व्यापक समारोह उनके पुरुष सहयोगियों के अनुग्रहपूर्ण सहयोग के बिना संभव नहीं थे। उस समय पुरुषों ने महिला कर्मियों के अतिरिक्त कार्य की जिम्मेदारियों को उठा कर उनको पूरी तरह से समारोह में भाग लेने का मौका दिया।

कार्यालयों में ऐसे आयोजन महिलाओं की उपलब्धियों को पहचानने और उनकी सराहना करने, चुनौतियों का सामना करने और संस्कृति का पोषण करने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

काव्यधारा

ब्रज भूषण

यह कविता केरल के पलक्कड़ में हुई एक हृदयविदारक घटना से प्रेरित है, जिसमें कुछ विस्फोटक से भरे फल खाने के बाद 15 साल की एक गर्भवती हथिनी की मौत हो गई थी। हथिनी पानी में तीन दिनों तक बिना खाए-पिए खड़ी रही थी, ताकि इस पीड़ा से उसे मुक्ति मिले, पर अफसोस। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में पता चला था कि पानी में सांस लेने के कारण हथिनी के फेफड़े खराब हो गए थे। साथ ही दो हफ्तों से उसने कुछ भी नहीं खाया था।

आह! मनुज ये तेरी कुटिलता,
भूखी थी, पर याचक तो नहीं थी,
हा थोड़ी उम्मीद सी रखी थी,
पर लाचार तो नहीं थी,

आह! मनुज ये तेरी नीचता,
न दे सकता था कुछ,
जाने ही दिया होता,
उस हथिनी को ममत्व का सुख,
पाने दिया होता,

आह! मनुज ये तेरी क्रूरता,
छलावा तेरी प्रकृति रही,
तूने ये साबित किया,
परोसकर बारूद, उसकी वेदना का विस्तार किया,
आह! मनुज ये तेरी धृष्टता,
हृदय नहीं तेरा कांपा, या शर्म नहीं तुझको आयी?
भूल गया वो जननी थी,
वरदान स्वरूप सृजन श्रृंखला की करणी थी।

शर्मसार हुई मानवता,
तूही इसका अभिशाप बना,
अभिमान था तुझे श्रेष्ठता पर,
खुद से ही तूने प्रतिघात किया,

खुद को तूने श्रेष्ठतर, हरदम ही माना है,
अनदेखी कर उन अनबोलो का,
दोहन करना, हरदम ही ठाना है,
ये आपदाएं और महामारियां,
है प्रतिफल तेरी करतूतों का,
गर न संभला तो जान ले,
तू खुद से ही मिट जाएगा,
तेरा ही प्रारब्ध तुझे, एक दिन अंत दिखाएगा।

❖❖❖

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन न्हावा शेवा में योग दिवस का आयोजन

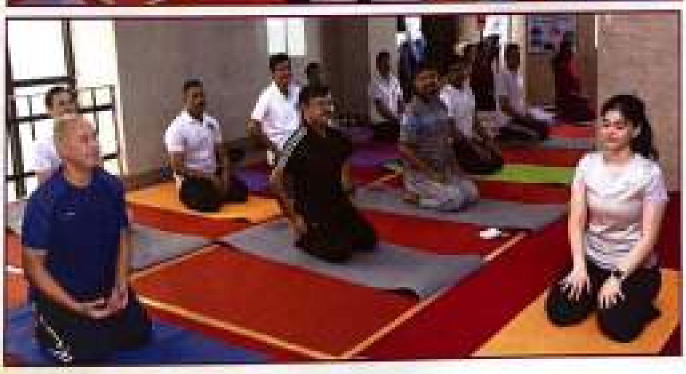

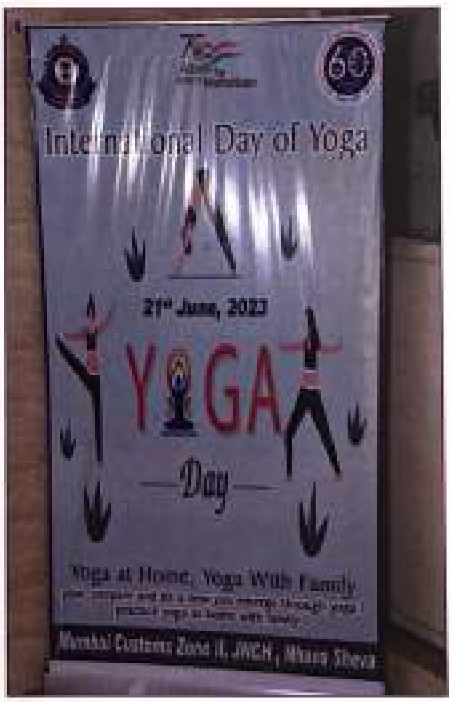

एक विकसित राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत

शरत चन्द्र झा

अधीक्षक

परिभाषा-

किसी भी मनुष्य के नैतिक चरित्र का पतन ही भ्रष्टाचार है। यह सकल समाज के हर वर्ग-विशेष में व्याप्त है।

प्रकार-

भ्रष्टाचार समाज में फैली उस जहर की तरह है, जो इंसान की हर अच्छाई को मार देता है। वह बहुआयामी समस्या है, जो निम्नवत् हैं-

- ❖ **नैतिक भ्रष्टाचार** - मनुष्य की नैतिकता की गिरावट इस भ्रष्टाचार को परिभाषित करता है। माँ-बाप के प्रति कर्त्तव्यों से विमुखता, बेटा-बेटी के परवरिश में असमानता इस भ्रष्टाचार में व्याप्त है।

- ❖ **आर्थिक भ्रष्टाचार** - समाज में दफ्तरीय कार्यवाही से लेकर जो भ्रष्टाचार की शक्ल दिखाई देती है, वह तो बस एक आयाम है। गरीबों के द्वारा पंचायतों से लेकर उच्च स्तरीय अधिकारियों द्वारा विभिन्न विभागों में लिया जाने वाला धन आर्थिक भ्रष्टाचार के तहत आता है।

- ❖ **राजनैतिक-स्तरीय भ्रष्टाचार** - चुनावी प्रक्रिया हमारे देश की जटिल प्रक्रियाओं में से एक है। चुनावी मौसम में रुपये, मादक पदार्थ व सामानों का किसी भी चुनावी दल द्वारा दिया जाना इस भ्रष्टाचार की ओर इशारा करता है। विभिन्न संनिदाओं और निविदाओं की प्रक्रियाओं में बड़े स्तर पर लिया जाने वाला काम इस भ्रष्टाचार में सम्मिलित है।

- ❖ **सामाजिक व सांस्कृतिक भ्रष्टाचार** - सामाजिक स्तर पर आचरण भ्रष्टरेखा चहुओर परिवर्तित है। धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यकलापों में वैदिक मंत्रों के साथ-साथ अश्लील गानों का बजना, शादियों में पुरातनता छोड़ आधुनिक स्तर पर समाज से परिभाषित नियमों को त्यागना इस भ्रष्टाचार को दर्शाता हैं।

भ्रष्टाचार दूर करने के उपाय

- ❖ **आचरण में दृढ़ता** - सामान्यता व्यक्ति के आचरण सतत् प्रक्रियाओं से गुजरकर ही बनती है और यह आदत में शुमार हो जाती है। परिवार व समाज का यह एक ऐसा कर्तव्य है, जिसे वह या तो छोड़ चुका है या भूल चुका है। किशोरवस्था से ही उनके सदाचरण के उपाय उन्हें भ्रष्टाचार से दूरकर सकता है और हर इंसान की सदाचरण देश को भ्रष्टाचा मुक्त बना सकता है।

- **कानून द्वारा सक्तीकरण व कानून सुधार -** हमारे देश में कानून का सख्ती से न पालन होना भी देश को भ्रष्टाचार के आग में झोंकने का एक कारण है। जघन्य अपराध को जो लोग पैसों से तोलकर रिहाई का सुख खरीदते हैं और एक ग़रीब छोटे से छोटे अपराध पर भी नहीं बख्शें जाते। आखिर एक देश एक कानून लागू क्यों नहीं होता? कानून का लचीलापन व कानून प्रक्रियाओं में विर्नव होना भी देश को भ्रष्टाचार की राह पर ले जाता है।
- **लोकपाल बिल कानून को लागू करना -** एक सामान्य से व्यक्ति के खिलाफ भी अन्याय की गुंजाइश न रहे और उच्च स्तरीय नेता व दल तक को भी दुराचरण के लिए बख़्शा न जाए, देश को ऐसा कानून न बनना प्राप्त करता है। लोकपाल जैसे बिल का पास होना व देश में लागू होना। ये हमारे देश को भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ना सिखाता है तथा विकास की ओर अग्रसर करता है।

वैश्विक भ्रष्टाचार सूचकांक से संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस व यूनाइटेड किंगडम जैसे देश हमसे काफी आगे हैं। जर्मनी व जापान मध्य क्रम में लंबे समय से हैं। पर हम इन सबों से काफी पीछे है। 2022 के भ्रष्टाचार सूचकांक के आधार पर हम 85वें स्थान पर है, जबकि 2018 में हम 78वें स्थान पर थे। विगत 4 सालों में यह हमारी 7 अंकों की गिरावट दर्शाती है।

निष्कर्ष :

भ्रष्टाचार की उपरोक्त प्रकारों व निराकरण एवं वैश्विक भ्रष्टाचार सूचकांक से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि हम आज भी पश्चिमी देशों से बहुत पीछे हैं। केवल सख्त कानून और उसका अनुपालन से हम सदाचार नहीं हो सकते।

जिस तरह बीज पेड़ को परिभाषित करता है और मौसम व जलवायु उसके सद्गुणों को उसी तरह समाज व परिवार में पल रहे हर बचपन का सही आचरण वाला मौसम वे सही व्यवहार पाले जलवायु की आवश्यकता हो जो उन्हें परिवार व समाज प्रदान कर सकता है और आदमी इंसान बनने की राह पर चल सकता है, जो न सिर्फ परिवार व समाज अपितु पूरे राष्ट्र को सही दिशा प्रदान कर भ्रष्टाचार मुक्त व विकसित राष्ट्र बना सकता है।

❖ ❖ ❖

राजभाषा कार्यान्वयन - जांच बिन्दु एवं अनुदेश 2023-24

OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION – CHECK POINTS AND INSTRUCTIONS 2023-24

1) राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी कागजात द्विभाषी रूप से जारी करना

Issuance of documents under Section 3(3) of the O.L. Act, 1963 in bilingual form

सभी संकल्प, सामान्य आदेश (स्थापना आदेश, कार्यालय आदेश,परिपत्र,नोट, सूचना), नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट्स, प्रेस विज्ञप्ति, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियाँ, टेंडर नोटिस, संसद के दोनों सदनों के समक्ष प्रस्तुत किए जाने वाले कागजात द्विभाषी जारी किए जाने चाहिए।

All Resolutions, General Orders (Establishment Order, Office Orders, Circular, Note), Rules, Notifications, Administrative and other reports, Press Communiqués, Contracts, Agreements, Licences, Permits, Tender, Notices, Reports and documents to be laid before the Houses of Parliament should be issued both in Hindi and in English.

जांच बिन्दु Check point

ऐसे कागजातों पर हस्ताक्षर करने वाले सभी अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि उक्त कागजात द्विभाषी रूप में ही जारी किए जाएं। यह भी सुनिश्चित करें कि वे कागजात हिन्दी व अँग्रेजी अर्थात द्विभाषी रूप में वैबसाइट में अपलोड किए जायें। नेमी आदेशों की पहचान की जाये और उनको द्विभाषी रूप में तैयार करवाए।

All the Officers signing such documents should ensure that all the documents are prepared and issued in bilingual form only. Concerned officers should ensure bilingual uploading of such documents in official website. Routine orders should be identified and prepared in bilingual form.

2) राजभाषा नियमावली 1976 का नियम-05 / Rule 5 of O.L. Rules 1976

हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे।

Communications from a Central Government Office in reply to communications in Hindi shall be in Hindi.

जांच बिन्दु Check point

सभी संबन्धित अधिकारी/सहायक यह सुनिश्चित करें कि हिन्दी में प्राप्त तथा हिन्दी में हस्ताक्षर किए हुए सभी पत्रों, आवेदनों, अपील या अभ्यावेदन आदि के उत्तर आवश्यक रूप से हिन्दी में ही भिजवाएं।

Dealing Officers/ Assistants should ensure that reply sent to all the letters, applications, appeals or representations received in Hindi and signed in Hindi.

3) **पत्र व्यवहार Communication**

'क' तथा 'ख' क्षेत्र को हिन्दी में पत्र भेजना

'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र और 'ख' क्षेत्र को पत्राचार का लक्ष्य 90% है।

'क' क्षेत्र (बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़, झारखंड, दिल्ली तथा अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह) और

'ख' क्षेत्र (गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब और चंडीगढ़) को भेजे जाने वाले प्रेषण पत्र, स्मरण पत्र आदि को हिन्दी / द्विभाषी रूप में जारी करना चाहिए।

The target of correspondence from region 'B' to region 'A' and region 'B' is 90%.

Letters, reminders etc. meant for Region 'A' (Bihar, Jharkhand, Rajasthan, Haryana, U.P, Uttarakhand, M.P, Chattisgadh, Himachal Pradesh, Delhi and Andaman & Nicobar Islands) and

Region 'B' (Gujarat, Maharashtra, Punjab & U.T. of Chandigarh) should be issued in Hindi/ bilingual.

जांच बिन्दु Check point

सभी संबन्धित अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि 'क' एवं 'ख' क्षेत्र को यथासंभव पत्र हिन्दी में भेजें। इस प्रयोजन के लिए हिन्दी अनुभाग की सहायता ली जा सकती है। सचिवीय कार्य करने वाले अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों के कार्यालय (उत्तर एवं मध्य भारत के कार्यालयों) के पते यथासंभव हिन्दी में लिखे जाएँ। अनुभाग प्रमुख यह सुनिश्चित करें कि इस संबंध में आदेशों का अनुपालन हो रहा है।

Officers should ensure to prepare and send letters in Hindi/bilingual to Region 'A' & 'B'. Standard drafts of forwarding letter, reminders etc. can be got prepared in Hindi/ Bilingual as far as possible with the assistance of Official Language Section.

4) **राजभाषा नियमावली 1976 का नियम-11 / Rule 11 of O.L. Rules 1976**

निर्धारित प्रयोजन के लिए हिन्दी एवं अँग्रेजी का प्रयोग/Use of Hindi and English for specified purpose

क) आम जनता की जानकारी के लिए प्रदर्शित सभी सूचना पट्टों, नेम प्लेट और गाड़ियों के नाम पट्ट आदि को द्विभाषी रूप में तैयार करवाएँ। ऐसी सामग्रियों को तैयार करते समय हिन्दी भाषा ऊपर या पहले और अँग्रेजी भाषा उसके नीचे या पीछे होनी चाहिए तथा अक्षरों के आकार समान होने चाहिए।

a) All sign boards, name plates, name plate in official vehicle etc. displayed for the public information, should be prepared in bilingual form. While preparing such materials, Hindi language should be above or before and English language should be below or behind it and the size of the letters should be same.

ख) सभी रबड़ की मोहरें, पत्र शीर्ष, रजिस्टरों के शीर्षक, फॉर्म तथा लिखित/मुद्रित या उत्कीर्ण अन्य सामग्री- हिन्दी और अँग्रेजी में होनी चाहिए।

b) All rubber stamps, letter heads, headings of registers, forms and other items of stationary written, printed or inscribed should be in bilingual pattern i.e. in Hindi and in English.

ग) सरकारी कार्यालय में प्रयोग किए जा रहे सभी बैज और लोगो द्विभाषिक रूप में ही हों। सभी अधिकारियों द्वारा फाइलों में टिप्पणी, रजिस्टरों में प्रविष्टि हिन्दी में की जाये।

c) All badges and logos used by the Government Offices should be prepared in bilingual form. Entries in registers, noting in file should be made in Hindi.

जांच बिन्दु Check point

साईन बोर्ड, रबड़ मोहर, बैनर और नाम पट्ट तैयार करवाने वाले अधिकारी की यह जिम्मेदारी है कि ऐसे सभी मदों को नियमानुसार क्रम में द्विभाषी रूप में तैयार करवाएँ और उसे इस्तेमाल में लाएँ।

Officers responsible for preparing Sign Board, Banner, Name Plates & Rubber Stamp should ensure that all such items are prepared and used in bilingual form as per the above said sequence.

स्टेशनरी जैसे रजिस्टर, गार्ड फाइल कवर, सरकारी लिफाफे, प्रिंटेड सामग्री आदि तैयार करवाने वाले अधिकारी की यह ज़िम्मेदारी है कि ऐसे सभी मदों को द्विभाषी रूप में तैयार करवाएँ और उसे इस्तेमाल में लाएँ।

Officers responsible for preparing Stationery i.e. Guard files, Registers, Govt. Envelops etc. should ensure that all such items are prepared and used in bilingual only.

कार्यालय में प्रयोग किए जा रहे सभी मुद्रित फॉर्म द्विभाषी/हिन्दी में उपलब्ध हैं। इनका प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।

All printed forms of the office are available in Bilingual/Hindi. Make sure to use them.

सेवा पुस्तिकाओं व कार्यालय रजिस्टरों में हिन्दी में प्रविष्टियाँ Entries in Hindi in 'Service Books' and office Registers :

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के आदेशानुसार 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों के कार्यालयों में उपलब्ध सभी रजिस्टरों एवं उसमें कार्यरत अधिकारियों व कर्मचारियों की सेवा – पुस्तिकाओं के शीर्षक द्विभाषी होने चाहिए तथा उनमें प्रविष्टियां केवल हिन्दी में की जानी चाहिए। इस बात की पड़ताल सेवा पुस्तिका में प्रविष्टियां करते समय/ उस पर हस्ताक्षर करते समय कर ली जाए।

In accordance with the order of the Ministry of Home Affairs, Deptt. of O.L., all registers available in the Offices of Region 'A'& 'B' and Heading of the Service Books in respect of all the officers working therein should be in bilingual form and entries should only be made therein in Hindi. This fact should be examined at the time of making entry in the Service Books/signing the Service-Books.

5) **वैबसाइट एवं कम्प्यूटरों पर टंकण सुविधा संबंधी निर्देश/**
Website & Instructions regarding typing facility on computers

कार्यालय वैबसाइट पूर्णतः द्विभाषी रूप में तैयार की जानी है। कार्यालयों के सभी कम्प्यूटर द्विभाषी टंकण सुविधा वाले होने चाहिए। भारत सरकार ने इसके लिए 100% लक्ष्य रखा है।

Office website is to be prepared in bilingual form compulsorily. All computers in the offices should have bilingual typing facility. Government of India has set 100% target for this purpose.

जांच बिन्दु Check point

एडीकंटेन्ट एडमिनिस्ट्रेटर/वेबसाइट प्रभारी कार्यालय की वेबसाइट को अपडेट एवं द्विभाषी बनाना सुनिश्चित करें। ई डी आई (हार्डवेयर) अनुभाग सुनिश्चित करें कि विभिन्न अनुभागों, उच्च अधिकारियों को कंप्युटर सिस्टम प्रदान करते समय उसमें फोनेटिक आधारित हिन्दी टंकण सुविधा हो।

Content Administrator/Incharge of the website should ensure preparation and updation of the website of the office in bilingual form. EDI (Hardware) section should ensure phonetic based Hindi typing facility in all the computers while issuing them to various sections and higher level officers.

6) हिन्दी पुस्तकों की खरीद / Purchase of Hindi Books

एक वित्तीय वर्ष में मानक ग्रंथों/ सदर्भ पुस्तकों को छोड़कर कुल पुस्तकालय अनुदान का 50% हिन्दी पुस्तकें, जिसमें हिन्दी ई बुक, पेन ड्राइव और अंग्रेजी/क्षेत्रीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद कराने पर किए गए खर्च शामिल हों, की खरीद पर किया जाए।

In a financial year, 50% of the total library grant, excluding standard texts/reference books, should be spent on the purchase of Hindi books, including Hindi e-books, pen drives and the expenses incurred on translation from English/regional languages to Hindi.

जांच बिन्दु Check point

पुस्तकों की खरीद से संबंधित अनुभाग यह सुनिश्चित करे कि प्रतिवर्ष राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी की पुस्तकों की खरीद के लिए निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप हिन्दी की पुस्तकों की खरीद की जाए।

The section related to the purchase of books should ensure that Hindi books are purchased every year according to the targets fixed for the purchase of Hindi books by the Department of Official Language.

सभी अनुभाग प्रमुखों का यह उत्तरदायित्व है कि उपरोक्त जांच बिंदुओं का दृढ़तापूर्वक अनुपालन सुनिश्चित करें।

It is the responsibility of all the Section Heads to ensure strict compliance of the above check points.

❖❃❖

सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II जेएनसीएच, न्हावा शेवा में हिन्दी पखवाड़ा एवं राजभाषा सम्मेलन-2022' का आयोजन

निष्पादन प्रबंधन महानिदेशालय, सीबीआईसी, नई दिल्ली के निर्देशानुसार दिनांक 14.09.2022 से 29.09.2022 तक की अवधि के दौरान सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II के अंतर्गत कार्यरत समस्त 07 आयुक्तालयों के लिए संयुक्त हिन्दी पखवाड़ो का आयोजन किया, जिसके अंतर्गत विभागीय अधिकारियों और कार्मियों के लिए राजभाषा ज्ञान, टिप्पण एवं प्रारूपण और निबंध लेखन प्रतियोगिताओं का आन किया गया। इन

प्रतियोगिताओं में हिन्दीभाषी और हिन्दीतर भाषियों के लिए अलग-अलग मूल्यांकन प्रक्रिया अपनाई गई एवं विजेताओं को नकद पुस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किये गये।

समापन समारोह दिनांक 29.09.2022 के प्रथम चरण में राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में आमंत्रित किये गये विभिन्न व्यापारिक समूहों के प्रतिनिधियों के अलावा विभागीय अधिकारी भी बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। सम्मेलन के अध्यक्ष मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II श्री मोहन कुमार सिंह ने अपने सम्बोधन में पूरे

अंचल में किये जाने वाले राजभाषा नीति से जुड़े कार्यान्वन को केन्द्रित करते हुए राजभाषा अनुपालन को कार्यालय से बाहर भी ले जाने की आवश्यकता बताई, उन्होंने आमंत्रित जनप्रतिनिधियों और करदाताओं से राजभाषा हिन्दी में सरल तरीके से कार्य करने में सहयोग प्रदान करने की भी अपील की। राजभाषा अनुभाग ने इस विषय पर पूर्व में अनुवादित द्विभाषी प्रारूपों को दिखाया एवं इसके दैनिक कार्यालयीन कार्यों में प्रयोग करने का अनुरोध किया। इन द्विभाषी प्रारूपों को अंचल-II की वेबसाइट पर भी उपयोगार्थ अपलोड किया गया है।

सम्मेलन के अगले चरण में व्यापारिक समूहों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में विभागीय ई पत्रिका शेवा कृति के चतुर्थ अंक का विमोचन किया गया एवं हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित हुई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किये गये, जिसकी सूचना दिनांक 29.09.2022 को न्हावा शेवा सीमाशुल्क के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से जारी की गयी।

❖❖❖

न्हावा शेवा निर्यात प्रोत्साहन विजन

NHAVA SHEVA EXPORT ENCOURAGEMENT VISION (NEEV)

निरंतर निर्बाध निर्यात

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन (जेएनसीएच) ने एक परिवर्तनकारी पहल लेते हुए न्हावा-शेवा बंदरगाह के माध्यम से निर्यात प्रोत्साहन के उद्देश्य से एक गौरवशाली योजना 'नीव'। -'न्हावा-शेवा निर्यात प्रोत्साहन विजन' प्रस्तुत की। माननीय मुख्य आयुक्त महोदय, जेएनसीएच के नेतृत्व में इस क्षेत्र के निर्यात परिदृश्य में एक क्रांतिकारी पहल करने के लिए 'नीव' जैसा दूरदर्शी कार्यक्रम कार्यान्वित होने जा रहा है।

'नीव' निर्बाध निर्यात प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाने, व्यापार दक्षता को बढ़ावा देने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक रूपरेखा की परिकल्पना है। इस पहल का उद्देश्य दस्तावेज़ीकरण प्रक्रियाओं को कारगर बनाना, परिवर्तन समय को कम करना और सीमाशुल्क संचालन में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाना है।

मुख्य आयुक्त, जेएनसीएच ने निर्यात-संचालित विकास को गति प्रदान करने के लिए उत्प्रेरक स्वरूप में सीमाशुल्क अधिकारियों की एक समर्पित टीम के साथ 'नीव' की रूपरेखा तैयार की। यह कार्यक्रम निर्यातकों को एक सहायक पारिस्थितिकी-तंत्र प्रदान करेगा, जो उन्हें वैश्विक व्यापार के लिए न्हावा-शेवा बंदरगाह के

महत्वपूर्ण सुविधाओं का लाभ लेने के लिए सशक्त बनाएगा।

'नीव' विभिन्न हितधारकों जैसे सरकारी एजेंसियों, निर्यातकों, लॉजिस्टिक्स और उद्योग संघों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के महत्व पर भी जोर देता है। रचनात्मक साझेदारियों के माध्यम से 'नीव' व्यापार समन्वय को बढ़ावा देगा, सर्वश्रेष्ठ कार्यशैलियों को साझा करेगा और सामूहिक रूप से चुनौतियों का समाधान करेगा, जिससे अंततः निर्यात क्षेत्र की वृद्धि होगी।

इस अवसर पर श्री राजेश पाण्डे, मुख्य आयुक्त-सीमाशुल्क, जेएनसीएच द्वारा द्वारा ई-समाधान न्हावा शेवा शिकायत निवारण पोर्टल का शुभारंभ करते हुए कहा 'माननीय प्रधान मंत्री के 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था के लक्ष्य और 'मेक इन इंडिया फॉर वर्ल्ड' के विजन को ध्यान में रखते हुए, सीमाशुल्क को निर्यात प्रोत्साहन

दिनांक 16 जून 2023 को 'नीव' के प्रमोचन पर माननीय मुख्य आयुक्त महोदय, आयुक्तगण एवं अन्य गणमान्य अतिथिगण

में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए चेयरमैन, सीबीआईसी के कुशल नेतृत्व में हम 'नीव' विजन ला रहे हैं।'

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन सभी निर्यातकों, आयातकों और व्यापारिक्त समुदाय के सदस्यों का आवाहन करता है कि वे सब 'नीव' कार्यक्रम के लाभों के बारे में जाने और इस परिवर्तनकारी यात्रा में सक्रिय रूप से भाग लें।

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन अपील करता है कि हम साथ मिलकर अंतरराष्ट्रीय व्यापार के केंद्र के रूप में न्हावा-शेवा बंदरगाह की पूरी क्षमता का उपयोग कर सकते हैं और क्षेत्र की आर्थिक प्रगति में तेजी ला सकते हैं।

'नीव' के कारण 'सशक्त निर्बाध निर्यात' के लिए लागू विभिन्न योजनाओं का समेकन भी हो रहा है।

माननीय प्रधानमंत्री जी के भारत को 5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने के विजन में हमारा प्रयास है कि हम एनईईवी ('न्हावा-शेवा निर्यात प्रोत्साहन विजन') के माध्यम से इस लक्ष्य में 1 ट्रिलियन निर्यात की मदद कर सकें।

माननीय अध्यक्ष, सीबीआईसी का 'प्रक्रियाओं का सरलीकरण और कागज रहित निर्यात' का ध्येय इस एनईईवी ('न्हावा-शेवा निर्यात प्रोत्साहन विजन') के माध्यम से फलीभूत होगा

'भागीदारीपूर्ण सुधार' और 'मदद के दृष्टिकोण' के साथ एनईईवी ('न्हावा-शेवा निर्यात प्रोत्साहन विजन') यही बात प्रसारित करता रहेगा-

'विश्व के लिए मेक इन इंडिया'

❖❖❖

यात्रा

मंगलौर से गोवा की यात्रा

कलाकान्त सिंह

आयुक्त

यूं ही एक दिन एक साथी का वीडियो मैसेज व्हाट्सअप पर आया, जो एक खूबसूरत से बीच के बारे में था। हमने पूछा ये क्या है! इतना खूबसूरत समुद्र और नदी एक साथ मिलती हुई नजर आ रही है। पहली नजर में मुझे आस्ट्रेलिया का पूर्वी किनारा लगा या तो फिर सेशल्स द्वीप का कोई बीच।

उसने कहा यह मारवन्ते बीच है जो कर्नाटक के पश्चिमी तट पर है। बात 2021 की है। मैं बंगलौर में पदस्थापित था। बस दिसम्बर महीने का इंतजार किया और हम तीन दोस्त बंगलौर से गोवा के समुद्री अभियान सड़क के रास्ते से का प्लान बना लिया।

हम सभी अपने-अपने शहरों से मंगलौर पहुंचे। मंगलौर शहर अरब सागर और पश्चिमी घाट के बीच बसा हुआ एक खूबसूरत शहर है। यह शहर अपने खूबसूरत बीच और व्यंजन के लिए खासा मशहूर है। यहां की मंगलौर बन और नीर डोसा की तो बात ही निराली है। यहां के समुद्री बीच सैलानियों को खासा आकर्षित करते हैं, जैसे पनाम्बुर बीच, सुरथकल बीच और सोमेश्वर बीच।

पूरी शाम मंगलौर को देखने के बाद वहीं रात में विश्राम किया और अगले दिन उडप्पी जाना था। यह शहर एक धार्मिक स्थल है, जो अपने विभिन्न मंदिरों और मठो के लिए खासा प्रसिद है, जिसमें सबसे ज्यादा प्रसिद्ध कृष्ण मंदिर है। यह शहर दक्षिण भारतीय व्यंजन के लिए भी बहुत प्रसिद है। आप अभी भी अममून भारत के सभी शहरों में उडप्पी होटल/रेस्टोरेंट देख सकते हैं। यहीं पर प्रसिद्ध मणिपाल प्रौद्योगिकी संस्थान स्थित है। हमने अपनी शाम मालवे बीच पर गुजारी। जब आप उडप्पी से उत्तर की ओर बढ़ते हैं तब राष्ट्रीय राजमार्ग बिल्कुल पश्चिमी तट के साथ सामनांतर चलता है और कभी आप अरब सागर के साथ रहते हैं और फिर कभी आप पश्चिमी घाट के पहाड़ों के साथ रूबरू होते हैं।

एक घंटे की यात्रा के बाद जो आप देखते हैं वो बिल्कुल अलौकिक है। यह मारवंते बीच है। रास्ते के बायीं तरफ अरब सागर और दाहिने तरफ सौपर्निका नदी है। सुनहरी रेतीली बालू नीला आसमान, झूमते हुए नारियल के पेड़ मारवन्ते की सुन्दरता में चार चाँद लगाते हैं।

खैर जब आप सड़क मार्ग से चलते हैं, तब आप केवल उसकी सुंदरता दायें और बायें तरफ से देख पाते है। अगर आप इसकी घटा ड्रोन से ली गयी फोटो को देखेंगें तो इस जगह की प्राकृतिक सुंदरता अवर्णनीय है। मैं इस जगह को पूरे भारत के 'वन आफ द बेस्ट टूरिस्ट प्लेस' में शामिल करना चाहूंगा।

फिर हमारा अगला पड़ाव मुरुदेश्वर था। यह जगह अपनी विशालकाय और स्थापत्य कला से भरपूर मुरुदेश्वर मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। उसी मंदिर के प्रागंण में खुले आसमान में भगवान शिव की विशालकाय 130 फिट ऊंची प्रतिमा है। यह प्रतिमा शिव के विशाल व्यक्तित्व को और भी विशालकाय बना देती है। अगले दिन गोकर्णा के बीच को लुत्फ उठाते हुए हम कारवार पहुंचे। गोकर्णा बीच संभवत: कर्नाटक की सबसे अच्छी बीच मानी जाती है और यह बीच विदेशी सैलानियों को भी काफी आकर्षित करती है। कारवार भारतीय नौसेना का बहुत ही प्रसिद्ध नेवल बेस है। कारवार के रास्ते होते हुए कुछ देर चलने के बाद ही हम गोवा पहुंचे, जहां हमने कोलवा बीच में रहने का प्रोग्राम बनाया। दो दिन तक गोवा के ढेर सारे खूबसूरत बीच, चर्च, दक्षिण गोवा की प्रसिद्ध व्यंजन का लुत्फ उठाया और फिर हम पणजी से विमान की यात्रा करके वापस बंगलौर पहुंचे।

ऐसे तो भारत के समुद्री तट के साथ कुछ रास्ते काफी प्रसिद्ध हैं जैसे कलकत्ता से पुरी, चेन्नई से पांडिचेरी, बाम्बे से गोवा और मंगलौर से गोवा। ये चारो सड़क मार्ग अपने विशिष्ट सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं पर हमारी मंगलोर से गोवा की सड़क यात्रा बेहद खूबसूरत यादगार और सुहानी रही। आप भी यहां की सैर कीजिए और इस प्राकृतिक सौंदर्य का लुत्फ उठायिये।

❖❖❖

सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II में सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2022 का आयोजन

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II में सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य शासकीय कार्यों में सतर्कता को बढ़ावा देना, उसमें नैतिकता को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अपने दायित्वों को निपटाना और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई के महत्त्व को प्रसारित करना है। यह समारोह सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्मदिन यानी 31 अक्टूबर वाले सप्ताह के दौरान आयोजित किया जाता है।

वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान, 'विकसित राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत' थीम के तहत 31 अक्टूबर, से 6 नवंबर, 2022 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2022 का उद्घाटन माननीय मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क अंचल-II के द्वारा किया गया, जिनके नेतृत्व में सभी अधिकारियों ने सत्यनिष्ठा की शपथ ली। बहुत आवश्यक था कि सतर्कता और नैतिकता के महत्व को प्रभावी ढंग से संप्रेषित किया जाए, इसलिए सम्पूर्ण सीमाशुल्क भवन एवं बाहरी क्षेत्र में स्थित सीएफएस में 'विकसित राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत' विषय को रेखांकित करने वाले पोस्टर और बैनर प्रसारित किए गए।

इस जागरूकता सप्ताह के दौरान दिनांक 1.11.2022 को 'निवारक सतर्कता, भ्रष्टाचार, शासन और अनैतिक प्रथाओं से निपटने में नागरिकों की भूमिका' विषय पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें बैंक ऑफ इंडिया के मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री लक्ष्मी नारायण

एन. रथ ने व्याख्यान दिया। इसके उपरांत अधिकारियों के साथ एक संवाद-सत्र में इस चर्चा का आयोजन किया गया।

दिनांक 2.11.2022 को भ्रष्टाचार के खिलाफ जागरूकता का प्रसार करने और सतर्कता को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से जसखार ग्राम पंचायत में एक परस्पर संवाद सत्र का आयोजन किया गया।

इसके साथ-साथ दिनांक 2.11.2022 को ही जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में निबंध लेखन और स्लोगन लेखन प्रतियोगिताएं का आयोजन भी किया गया, जिसमें जेएनसीएच के अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत दिनांक 4.11.2022 को विभिन्न सीएफएस और पार्किंग प्लाजा में शिकायत निवारण शिविर लगाए गए।

दिनांक 4.11.2022 को माननीय मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क जेएनसीएच के साथ सीमाशुल्क अधिकारियों के साथ एक इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किया गया, जिसके उपरांत निबंध और स्लोगन लेखन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का समापन दिनांक 5.11.2022 को नेरुल, नवीं मुंबई स्थित 'ज्वेल ऑफ नवी मुंबई' पार्क में आयोजित वॉकथॉन के माध्यम से हुआ। इस कार्यक्रम में माननीय मुख्य आयुक्त महोदय, आयुक्तगण , सभी अपर आयुक्तगण और जेएनसीएच के अन्य अधिकारियों ने भी वॉकथॉन में भाग लिया और साथ ही साथ आम जनता को भी वॉकथॉन का हिस्सा बनने हेतु प्रोत्साहित करते हुए उनको शामिल किया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह हमें बार-बार यह आभास दिलाता है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। ऐसे वार्षिक आयोजन के माध्यम से हम सतर्कता, सत्यनिष्ठा और नैतिक आचरण को बढ़ावा देते हुए राष्ट्र की व्यापक उन्नति और प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं। ऐसे आयोजन न्यायसंगत और पारदर्शी समाज के निर्माण को बढ़ावा देते हैं, जिसमें भ्रष्टाचार को पनपने की कोई जगह नहीं मिलती। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के माध्यम से व्यक्तियों और संगठनों को अधिक जवाबदेह, पारदर्शी बनाने की प्रेरणा मिलती है। जिसमें एक भ्रष्टाचार मुक्त भविष्य दिखाई देता है।

आलेख

बच्चों पर हावी होती टेक्नॉलोजी

बच्चों पर टेक्नॉलोजी का प्रभाव :-

वर्तमान भारत का यह एक गंभीर विषय है। वैसे तो यह युग टेक्नॉलोजी का युग है और जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं रह गया है। उद्योग, व्यापार, सुरक्षा, शिक्षा, यातायात, सूचना एवं मनोरंजन आदि सभी क्षेत्रों में टेक्नॉलोजी से क्रान्ति आ गई है। जब से कम्प्यूटर, लैपटॉप और मोबाइल फोन का चलन हुआ है, जन-जीवन भी प्रभावित हुआ है। आज की युवापीढ़ी एवं बच्चों पर यह टेक्नॉलोजी अपना विशेष प्रभाव छोड़ रही है। प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं की ऑनलाइन तैयारी व ऑनलाइन परीक्षा अब आम बात हो गई है, जो सरल एवं निष्पक्ष परीक्षा संचालन में एवं चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वर्तमान सूचना क्रांति के कारण बच्चों की दुनिया में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। इस टेक्नॉलोजी के कई अच्छे प्रभाव हैं। बच्चे अपनी पढ़ाई के लिए लैपटॉप, कम्प्यूटर, स्लाइड्स, प्रोजेक्टर और मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं। इनसे बच्चों की पढ़ाई रुचिकर एवं आसान हो जाती है। वांछित सूचनाएं इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त कर लेते हैं, अपने अध्यापकों से, कोरोना के बुरे समय में, ऑनलाइन होकर पढ़ाई कर लेते थे। इस तरह हम देखते हैं कि टेक्नॉलोजी से बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं। उनका मानसिक विकास हुआ है और शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों को बहुत सहूलियत हो गई है। इसी प्रकार मनोरंजन के क्षेत्र में बच्चों को अधिक सुविधा हुई है। गेमिंग्स एप्स के माध्यम से वे बोर होने से बचने के लिए मनोरंजन करते हैं। उनके जीवन की नीरसता दूर हुई है।

बच्चे अपने उत्तम स्वास्थ्य के लिए वांछित जानकारी इंटरनेट के माध्यम से मोबाइल पर या डेस्कटॉप कम्प्यूटर पर प्राप्त कर सकते हैं। देशाटन के लिए किसी भी दर्शनीय स्थल पर माता-पिता के साथ जाने के पूर्व ही वहाँ की भौगोलिक स्थिति, जलवायु एवं दर्शनीय स्थलों की जानकारी निकाल लेते हैं, जिससे उनकी जानकारी बढ़ती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि बच्चों पर टेक्नॉलोजी का अच्छा प्रभाव पड़ा है। यदि विवेक के साथ सभी बच्चे टेक्नॉलोजी का प्रयोग करेंगे तो निश्चय ही यह उनके जीवन के समृद्ध करेगी और वे भविष्य में अच्छे नागरिक एवं जागरूक व्यक्ति बन सकेंगे।

बच्चों पर टेक्नॉलोजी का दुष्प्रभाव :-

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, जिस तरह बिजली एक अच्छी सेविका है परन्तु बुरी मालिक है। उसी तरह से यदि टेक्नॉलोजी का प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से नियंत्रण के साथ नहीं किया गया तो यह घातक सिद्ध हो सकती है।

प्राय: यह देखा गया है कि बच्चे मोबाइल एवं लैपटॉप का प्रयोग बहुत अधिक कर रहे हैं। एक सीमा से अधिक कम्प्यूटर व मोबाइल को लगातार देखना, इनका प्रयोग करना, इन बच्चों पर बहुत बुरे प्रभाव डाल रहा है। उनकी दृष्टि की समस्याएं आ रही हैं। सरदर्द, नींद न आना, पढ़ाई में ध्यान केन्द्रित न हो पाना, ये सभी मोबाइल, लैपटॉप आदि के अत्यधिक प्रयोग के कुप्रभाव हैं।

बच्चों का मस्तिष्क कोमल एवं जल्द ही प्रभाव में आने वाला होता है। टेक्नॉलोजी/तकनीकी के उन पर हावी हो जाने से उनके स्वास्थ्य पर कुप्रभाव होते हैं। उन्हें आउटडोर गेम्स में भाग लेने का समय नहीं मिलता है। इससे उनका शारीरिक विकास भी ठीक से नहीं हो पाता। बच्चों में शारीरिक रूप से कमजोर होने के कारण, उनकी पढ़ाई के साथ-साथ स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। यह सभी को ज्ञात है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है। इस प्रकार हमारी भावी पीढ़ी ही कुप्रभाव से कमजोर हो रही है।

बच्चों पर टेक्नॉलोजी के हावी होने का दुष्परिणाम यह भी है कि कुछ बच्चे ऑनलाइन गेम खेलने के लिए माता-पिता से धन व्यवस्था करने के जिद करते हैं। गेमिंग का लगाव एक नशे का रूप ले चुका है।

इंटरनेट के माध्यम से कुछ बच्चे अश्लील साहित्य पढ़ना एवं अश्लील सामग्री पढ़ना प्रारम्भ कर देते हैं। इसके बहुत दुष्परिणाम होते हैं। विद्यार्थी सोच के भ्रष्ट होने के कारण कुछ बाल अपराध की तरफ भी झुकाव कर लेते हैं। छेड़खानी एवं अवयस्कों द्वारा बलात्कार की दु:खद घटनाएं भी कई बार समाचार पत्रों से मालूम पड़ती हैं।

टेक्नॉलोजी के बच्चों पर हावी होने से यह उन्हें उद्दंड भी बना देता है। माता-पिता की असम्मान करना एवं उनकी बात न मानना आम बात है। बच्चों पर अत्याधुनिक फैशन का भी असर पड़ा है। आधुनिक गैजेट्स नए मोबाइल एवं ब्रांडेड कपड़ों की जानकारी उनकी बाल्यावस्था में ही आवश्यकताओं को बढ़ा रही है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि टेक्नॉलोजी के अनियंत्रित एवं असीमित प्रयोग से ही सारी समस्याएं आ रही हैं। यदि माता-पिता अपने बच्चों को अपने नियंत्रण में रखकर, अपने मार्गदर्शन में टेक्नॉलोजी का प्रयोग करने दें तो टेक्नॉलोजी बच्चों पर हावी नहीं हो पाएगी। इस तरह कुप्रभावों से बचा जा सकता है।

माता-पिता को बच्चों को आत्मविश्वास का महत्व बताना है। बच्चों को विश्वास में लेकर टेक्नॉलोजी के प्रभाव-कुप्रभाव पर चर्चा करनी चाहिए।

यदि थोड़ी सावधानी से काम लिया जाय, माता-पिता सतर्क रहें, स्कूल में अध्यापकगण भी बच्चों को टेक्नॉलोजी के प्रयोग के बारे में जागरूक करते रहें तो बच्चों पर टेक्नॉलोजी हावी नहीं होने पायेगी। इस तरह से यह टेक्नॉलोजी उनके भविष्य को उज्ज्वल बना सकती है। टेक्नॉलोजी के बिना तो इस समय जीवन का कोई क्षेत्र नहीं है। आवश्यकता है कि बच्चों को टेक्नॉलोजी के अच्छे प्रयोग के लिए प्रेरित किया जाये, जिससे वे अच्छे विद्यार्थी एवं अच्छे नागरिक बन सकें।

- रवीन्द्र कुमार द्विवेदी

अधीक्षक (नि.), सेवानिवृत्त

बच्चों की विथिका

सृष्टि तिवारी
कक्षा : 7
बेटी -
श्री सुजीत तिवारी

अंकिता यादव
बेटी - मुकेश कुमार यादव

सृष्टि तिवारी
कक्षा : 7
बेटी -
श्री सुजीत तिवारी

पत्रिका में प्रयुक्त फोटो : गूगल साभार

उपलब्धि

हॉकी में श्री धर्मबीर यादव की प्रमुख उपलब्धियां

1. वर्ष 2018 में चेन्नई में आयोजित नेशनल लेवल हॉकी प्रतियोगिता में भाग लिया। (टीम रनर अप)
   (केन्द्रीय सचिवालय की टीम में सीमाशुल्क की ओर से चयनित)
2. वर्ष 2019 में झांसी में आयोजित नेशनल लेवल हॉकी प्रतियोगिता में भाग लिया।
   (केन्द्रीय सचिवालय की टीम में सीमाशुल्क की ओर से चयनित)
3. वर्ष 2022 में नई दिल्ली में आयोजित नेशनल लेवल हॉकी प्रतियोगिता में भाग लिया।
   (केन्द्रीय सचिवालय की टीम में सीमाशुल्क की ओर से चयनित)
4. वर्ष 2023 में वाराणसी में आयोजित ऑल इंडिया मोहम्मद शाहिद गोल्ड कप हॉकी टूर्नामेंट विजेता
5. वर्ष 2023 में वरिष्ठ के. डी. सिंह हॉकी टूर्नामेंट, लखनऊ में भाग लिया।
6. वर्ष 2023 में ग्वालियर में आयोजित ऑल इंडिया सिंधिया गोल्ड कप में भाग लिया।
7. वर्ष 2023 में ऑल इंडिया रेवेन्यू डिपार्टमेन्ट टूर्नामेंट, राजकोट में विजेता।

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन में 'कर सहायक' के रूप में कार्यरत श्री धर्मबीर यादव एक उभरते हुए हॉकी खिलाड़ी हैं (लाल जर्सी में)।

मुंबई ट्रांस हार्बर लिंक (एम.टी.एच.एल)

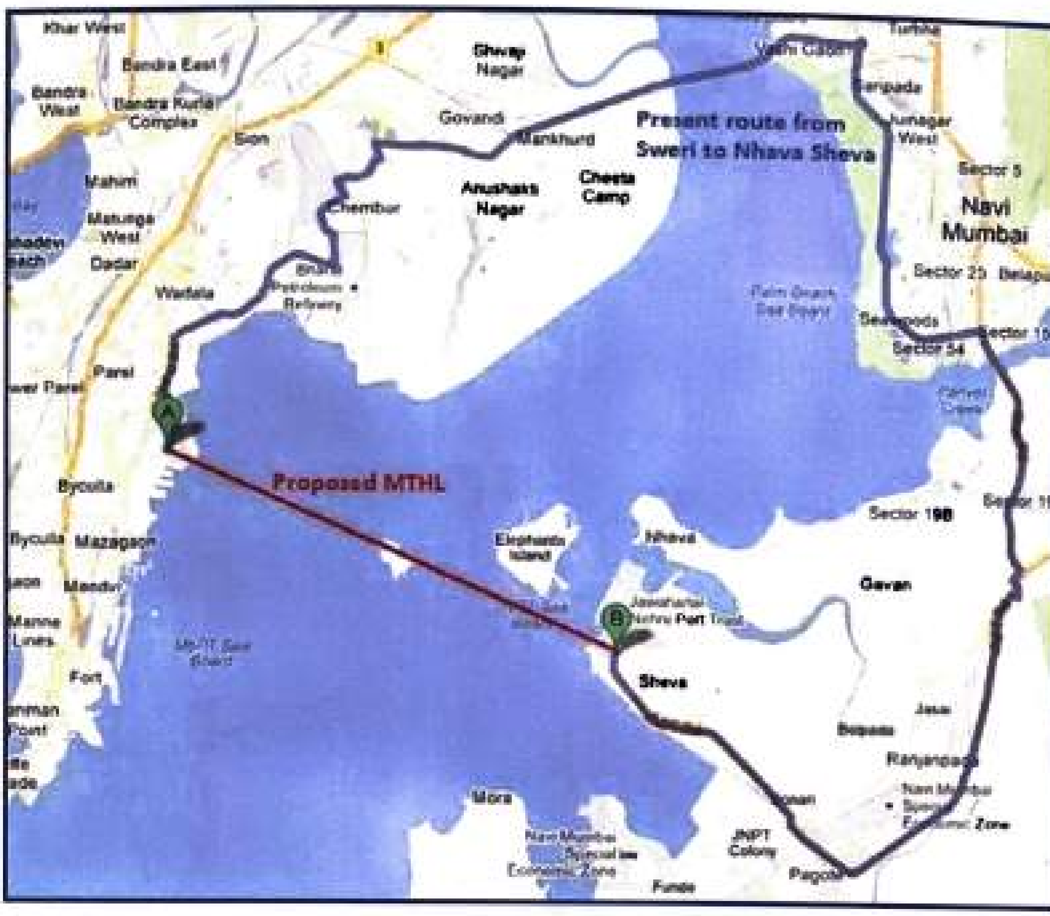

मुंबई ट्रांस हार्बर लिंक, जिसे सेवरी-न्हावा शेवा ट्रांस हार्बर लिंक के रूप में भी जाना जाता है, (आधिकारिक तौर पर श्री अटल बिहारी वाजपेयी ट्रांस हार्बर लिंक) एक निर्माणाधीन 21.8 किमी (13.5 मील) 6 - लेन एक्सेस-नियंत्रित एक्सप्रेसवे ग्रेड रोड ब्रिज है, जो मुंबई को उसके उपग्रह शहर नवी मुंबई से जोड़ेगा। पूरा होने पर यह भारत का सबसे लंबा समुद्री पुल होगा। यह पुल दक्षिण मुंबई के सेवरी में शुरू होगा, एलिफेंटा द्वीप के उत्तर में ठाणे क्रीक को पार करेगा और न्हावा शेवा के पास चिरले में समाप्त होगा। यह सड़क पूर्व में मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे और पश्चिम में निर्माणाधीन तटीय सड़क से जुड़ी होगी। 6 - लेन राजमार्ग 27 मीटर चौड़ा होगा, इसके अलावा दो आपातकालीन निकास लेन, किनारे की पट्टी और एक क्रैश बैरियर होगा।

मुद्रण : आर.के. पब्लिकेशन, मुंबई ★ Mo.: 9821251190 ★ E-mail : publicationrk@gmail.com